Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 11 | Issue : 2 | February 2025

वैदिक कालीन नारी शिक्षा : एक अध्ययन

डॉ. शिखर वासिनी

सह–प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग, एम.आर.एम. कॉलेज, दरभंगा, बिहार

ABSTRACT

प्राचीन भारत में स्त्री शिक्षा अपनी उच्चतम सीमा पर थी। वह पुरूषों के समकक्ष बिना भेद–भाव के शिक्षा प्राप्त करती थी। बुद्धि और ज्ञान में अग्रणी थी। पुत्र की तरह पुत्री का भी विद्यारम्भ से पूर्व उपनयन संस्कार सम्पन्न किया जाता था तथा वह भी ब्रह्मचर्य का पालन करती हुई विभिन्न विषयों का अध्ययन करती थी। उसे यज्ञ सम्पादन और वेदाध्ययन का पूर्ण अधिकार था, दर्शन और तर्कशास्त्र में स्त्रियाँ निपुण थी। सभा व गोष्ठियों में वे ऋग्वेद् की ऋचाओं का गान किया करती थी। ऋग्वेद् में उल्लिखित है कि कतिपय विदुषी स्त्रियों ने ऋग्वेद की अनेक ऋचाओं के प्रणयन में योग दान प्रदान किया था। पति के साथ समान रूप में वे यज्ञ में सहयोग करती थी। सूत्रकाल तक भी स्त्रियाँ यज्ञ सम्पादित करती थी। उत्तर वैदिक युग में भी स्त्री ब्रह्मचर्य में रहकर शिक्षा ग्रहण करती थी। वैदिक काल के अतिरिक्त वह ललित कलाओं में भी पारंगत होती थी। महाभारत से ज्ञात होता है कि पांडवों की माँ कुन्ती अथर्ववेद में पारंगत थी। इससे स्पष्ट है कि वैदिक युग की स्त्रियाँ मंत्रविद् और पडिंता होती थी तथा ब्रह्मचर्य का अनुगमन करती हुई उपनयन संस्कार भी कराती थी। अध्ययन तथा मनन के क्षेत्र में स्त्रियों की रूचि बराबर बढ़ और गम्भीर विषय में भी वे पारंगत होने लगी। याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी विख्यात दार्शनिका थी जिसकी रूचि सांसारिक वस्तुओं और अलंकारों में न होकर दर्शन शास्त्र में थी।

KEYWORDS: प्राचीन, भारत, स्त्री, शिक्षा, अध्ययन तथा सांसारिक

प्रस्तावनाः

वेदों के मुख्य विषय है कर्म, उपासना और ज्ञान, जो समस्त मानव जाति के धर्म हैं। वेद ज्ञान के भण्डार हैं। उस भण्डार में खोज करने पर नारी के महत्व और उसके सामाजिक–शैक्षिक योगदान को प्रकाशित करने वाले विषय भी दृष्टिगोचर होते हैं। चारो वेदों में से अधिकांशतः ऋग्वेद में ही प्राचीन काल से चली आने वाली नारी की सभ्यता और संस्कृति पर प्रकाश डाला गया है। वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति समाज में अत्यन्त ऊँची थी और उन्हें अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त थी। उन्हें धार्मिक क्रियाओं में पुरोहितों एवं ऋषियों का दर्जा प्राप्त था। वे धर्मशास्त्रार्थ में भी भाग लेती थीं। मानव जीवन की धुरी तीन आधारों पर टिकी है – ज्ञान, धर्म और शान्ति। ज्ञान, धर्म व शान्ति की स्वामिनी के रूप में स्त्री वाचक शब्द का प्रयोग होना उसकी श्रेष्ठता को बताता है। स्त्री को समृद्धि और संस्कृति की अधिष्ठात्री भी कहा जाता है। परा और अपरा शक्ति के रूप में चर्चा तत्व ज्ञानी हमेशा से करते रहे हैं। सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा आदि अनेक रूपों में उसकी आराधना होंती रही है। इन्हीं शक्तियों का संयुक्त एवं मूर्तिमान रूप नारी है। हिन्दू समाज में स्त्री का सम्मान और आदर प्राचीन काल से ही आदर्शात्मक और मर्यादायुक्त था। परिवार और समुदाय में उनके द्वारा कन्या, पत्नी, वधू और माँ के रूप में किये जाने वाले योगदान का सर्वदा महत्व और गौरव रहा है। सरस्वती देवी, पतितपावनी, धनदायिनी, सत्य की ओर प्रेरित करने वाली, शिक्षिका और ज्ञानदात्री मानी गयी है ।

शिक्षा, गृहस्त जीवन, यज्ञ–अनुष्ठान में स्त्रियों का सम्मानप्रद स्थान प्राप्त था। विधवाओं का पुनर्विवाह भी प्रचालित था। वैदिक कालीन नारी की जब हम बात करते हैं तो हमें उसके विभिन्न् रूपों और कार्यों का अवलोकन होता है। शिक्षा, धर्म, व्यक्तित्व और सामाजिक विकास में उसका महान योगदान था। नववधू को श्वसुरगृह की साम्राज्ञी माना जाता था। उसे पति के साथ प्रत्येक कार्य में सहयोगी माना जाता था। ऋग्वैदिक नारी पुरूषों की ही तरह समाज की स्थायी और गौरवशाली अंग थी। वह अत्यन्त सुशिक्षित, सुसभ्य तथा सुसंस्कृत होती थी। वह पति के साथ मिलकर याज्ञिक कार्य सम्पन्न कराती थी। वैदिक युगीन नारी स्वछन्द एवं मुक्त थी परन्तु उसे सामाजिक मान–सम्मान प्राप्त था। वैदिक युग में स्त्री शिक्षा अपनी उच्चतम सीमा पर थी। ऋग्वेदिक पंडिता स्त्रियों यथा–रोमशा, अपाला, उर्वशी, विश्ववारा, सिकता, निवावरी, घोषा, लोपामुद्रा आदि ने अध्ययन–अध्यापन के साथ–साथ अनेक ऋचाओं का भी प्रणमन किया था। उच्च शिक्षा प्राप्त स्त्री को विवाह योग्य अत्यधिक उत्तम माना जाता था। वैदिक कालीन स्त्रियाँ ब्रहमचर्य धर्म का पालन करते हुए उपनयन संस्कार भी कराती थी तब शिक्षा ग्रहण करती थी। ब्रहमयज्ञ में जिन ऋषियों की गणना की जाती है उनमें सुलभा, गार्गी, मैत्रेयी आदि विदुषियों के भी नाम सम्मानपूर्वक लिये जाते हैं जिनकी प्रतिष्ठा वैदिक ऋषियों के समान थी। वैदिक ज्ञान के साथ–साथ ललित कलाओं में भी पारंगत होती थी। सहशिक्षण पद्धति के अन्तर्गत ही छात्र–छात्राएँ एक साथ शिक्षा ग्रहण करते थे। पूर्व वैदिक कालीन अपाला ने अपने पिता को कृषि कार्य में सहयोग प्रदान किया था जो स्त्री ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों का उदाहरण प्रस्तुत करता है। वैदिक कालीन स्त्रियाँ गाय दुहना (दुहिता), सूत कातना, बुनना और वस्त्र सिलना भी जानती थी। तत्कालीन स्त्रियाँ नृत्य कला में भी निपुण थी और साथ ही ऋचाओं का गान भी करती थी।

इस प्रकार वैदिक कालीन स्त्री वैदिक शिक्षा के साथ–साथ नृत्य, संगीत, गान, चित्रकला आदि विषयों की भी शिक्षा ग्रहण करती थी। स्त्री अपना सर्वागीण विकास करने हेतु तत्पर रहती थी। ''ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्'' इस वाक्य से ज्ञात होता है कि कन्याएँ ब्रह्मचर्यपूर्वक गुरूकुल में निवास कर शिक्षा पूर्ण करने के अनन्तर ही युवा पति से विवाह करने की कामना करती थी। विवाह के अवसर पर पति–पत्नी दोनों ही कतिपय प्रतिज्ञायें करते थे, जिनका प्रयोजन एक दूसरे के प्रति कर्तव्यों का पालन करते हुए जीवन बिताना होता था। प्राचीन भारत में सभी स्त्रियाँ विवाह करके गृहस्थ जीवन ही व्यतीत नहीं करती थीं बल्कि बहुत सी स्त्रियाँ नृत्य, वादन, संगीत द्वारा जनसाधारण का मनोरंजन का भी कार्य करती थीं। ऐसी स्त्रियों को समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। वैदिक काल में प्रचलित विवाह संस्कार के अनिवार्य अनुष्ठान आजतक वैसे ही चले आ रहे हैं। वैदिक युग में स्त्री को सम्पत्ति अधिकार प्राप्त थे। वैदिक मंत्रों में संकेत मिलता है कि ससन्तान न होने पर पति के पश्चात् पत्नी ही सम्पत्ति की स्वामिनी होती थी। पुत्र न होने पर पिता की सम्पत्ति की उत्तराधिकारी मानी जाती थी। कभी–कभी स्त्रियाँ अपने सम्पत्ति विषयक अधिकार हेतु न्यायालय भी जाती थी। इसका तात्पर्य यह है कि वैदिक स्त्री अपने अधिकारों के प्रति भी जागरूक थी। वैदिक युगीन नारी स्वतन्त्र और स्वछन्द भी थी। उस समय परदा या अवगुंठन का कोई प्रचलन नहीं था। तभी सहशिक्षा का वातावरण था। साथ ही ऋग्वैदिक वर्णन बताते हैं कि नववधू सभी आगतों को दिखायी जाती थी। यह प्रदर्शित करता है कि वैदिक युगीन नारी नैतिकता, चारित्रिक सौष्ठव, निष्ठा, उज्जवल आचरण, सुसंस्कृतता की प्रतिमूर्ति थी। तत्कालीन स्त्री वैदिक समाज का एक आदर्श उदाहरण थी तथा यह आशा की जाती थी कि वह अपनी वृद्धावस्था तक जनसभाओं में बोल पाएगी तथा लोगों को समझ पाएगी। वैदिक कालीन नारी विदथ (सभा और समिति) तथा समन (उत्सव और मेला) में स्वच्छन्दतापूर्वक सम्मिलित होती थी। नारी स्त्रीधन से ब्राहमणों को दान देती थी। वृद्धावस्था तक नारी अपने घर में प्रभुता रखती थी। वैदिक ग्रन्थों के अध्यनोपरान्त ज्ञात होता है कि तत्कालीन नारी की दशा अत्यन्त उन्नित और परिपकृत थी तथा हिन्दू जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वह समान रूप से आदृत और प्रतिष्ठित थी।

पूर्व अध्ययनों की समीक्षाः

पूर्व अध्ययनों की समीक्षा के क्रम में विभिन्न आचार्यों द्वारा लिखित पुस्तकों का अवलोकन किया गया है जिसमेंः

मजूमदार (2011).ई.पू. भारत का उन्नत इतिहास में कहा है कि वैदिक काल में वे शिक्षा में पुरुषों के बराबर थीं और अपने विद्वत्तापूर्ण क्षेत्रों में भी पुरुषों से आगे थीं। अपाला, आत्रेय और घोषा इस काल की कुछ प्रसिद्ध विद्वान थीं।

प्रसाद एल.(2007) प्राचीन भारत का सरल इतिहास में कहा है कि वैदिक काल में कई महिला विद्वान थीं और वे पवित्र ग्रंथों और वेदों में पारंगत थीं। इन महिलाओं ने न केवल भजनों की रचना की बल्कि उन्होंने संगीत और नृत्य भी सीखा। निम्न तबके या जाति की महिलाओं ने कताई, बुनाई और सुई का काम सीखा। वैदिक काल के शिक्षकों ने महिलाओं को दो (दो) समूहों में विभाजित किया था– ब्रह्मवादिनी और सद्योद्वाहा।

त्रिपाठी रमाशंकर.(1991) प्राचीन भारत का इतिहास कहा है कि कई शिक्षित महिलाएँ शिक्षिका या उपाध्यायिनी बन गईं। वैदिक काल में कई महिला कवि और दार्शनिक थीं।

अध्ययन पद्धतिः

यह शोध आलेख मुख्य रूप से वर्णन एवं विश्लेषणात्मक एवं ऐतिहासिक आलोचनात्मक अध्ययन पद्धति पर आधारित है। वर्त्तमान अध्ययन वैदिक कालीन नारी शिक्षा के विविध पक्षों के अन्वेषण से संबंधित है अतः यह शोध आलेख मुख्य रूप से द्वैतियक स्रोत पर आधारित है। इस अध्ययन के लिए मूल अध्ययन स्रोत पत्र –पत्रिकाओं एवं दस्तावेज तथा विभिन्न आचार्यों द्वारा सम्पादित पुस्तकों द्वारा लिया है।

वैदिक काल में नारी षिक्षा की स्थितिः

प्राचीन भारत में स्त्री शिक्षा अपनी उच्चतम सीमा पर थी। वह पुरूषों के समकक्ष बिना भेद–भाव के शिक्षा प्राप्त करती थी। बुद्धि और ज्ञान में अग्रणी थी। पुत्र की तरह पुत्री का भी विद्यारम्भ से पूर्व उपनयन संस्कार सम्पन्न किया जाता था तथा वह भी ब्रह्मचर्य का पालन करती हुई विभिन्न विषयों का अध्ययन करती थी। उसे यज्ञ सम्पादन और वेदाध्ययन का पूर्ण अधिकार था, दर्शन और तर्कशास्त्र में स्त्रियाँ निपुण थी। सभा व गोष्ठियों में वे ऋग्वेद् की ऋचाओं का गान किया करती थी। ऋग्वेद् में उल्लिखित है कि कतिपय विदुषी स्त्रियों ने. ऋग्वेद की अनेक ऋचाओं के प्रणयन में योग दान प्रदान किया था। पति के साथ समान रूप में वे यज्ञ में सहयोग करती थी। सूत्रकाल तक भी स्त्रियाँ यज्ञ सम्पादित करती थी। उत्तर वैदिक युग में भी स्त्री ब्रह्मचर्य में रहकर शिक्षा ग्रहण करती थी। वैदिक काल के अतिरिक्त वह ललित कलाओं में भी पारंगत होती थी। महाभारत से ज्ञात होता है कि पांडवों की माँ कुन्ती अथर्ववेद में पारंगत थी। इससे स्पष्ट है कि वैदिक युग की स्त्रियाँ मंत्रविद् और पडिंता होती थी तथा ब्रह्मचर्य का अनुगमन करती हुई उपनयन संस्कार भी कराती थी। अध्ययन तथा मनन के क्षेत्र में स्त्रियों की रूचि बराबर बढ़ और गम्भीर विषय में भी वे पारंगत होने लगी। याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी विख्यात दार्शनिका थी जिसकी रूचि सांसारिक वस्तुओं और अलंकारों में न होकर दर्शन शास्त्र में थी। यही नही उसने अपने पति की सम्पत्ति में अपने अधिकार को, अपने पति याज्ञवल्क्य की दूसरी पत्नी के हित में त्यागकर केवल ज्ञान प्राप्त करने की याचना की थी। वैदिक युग में छात्राओं के दो वर्ग थे, एक सद्योवधू और दूसरा ब्रह्मवादिनी। सद्योवधू वे छात्राएँ थी जो विवाह के पूर्व तक कुछ वेद मंत्रों और याज्ञिक प्रार्थनाओं का ज्ञान प्राप्त कर लेती थी तथा ब्रह्मवादिनी वे थी जो अपनी शिक्षा पूर्ण करने में अपना जीवन लगा देती थी। ऋषि कुशध्वज की वेदवती ऐसी ही ब्रह्मवादिनी स्त्री थी। ऐसी स्त्रियाँ बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न होती थी, जो ज्ञान और बुद्धि में पारंगत ही नहीं बल्कि अनेक मंत्रों की उद्गात्री होती थी। वे दर्शन, तर्क, मीमांसा, साहित्य आदि विभिन्न विषयों की पंडिता होती थी।

नारी षिक्षा का पाठ्यक्रमः

पुराणों से विदित होता है कि नारी शिक्षा के दो रूप थे, एक आध्यात्मिक और दूसरा व्यवहारिक। आध्यात्मिक ज्ञान में बृहस्पति–भगिनी भुवना,

अपर्णा, एकपर्णा एक पाप्ला, मेना, धारिणी, संनति, शरूपा आदि कन्याओं के नामों का उल्लेख है, जो ब्रह्मवादिनी' थी। आध्यात्मिक ज्ञान की अभिवृद्धि योग और तप पर निर्भर करती थी जिसमें स्त्री का ब्रह्मचर्य, सदाचरण, गृहास्थिक शिक्षा से भी अवगत हुआ करती थी। ललित कलाओं में भी वे निपुण होती थी। कौशलपूर्वक नृत्य करती थी तथा ऋग्वेद की ऋचाओं का गान करती थी।

उत्तर वैदिक कालीन व्यवहारिक शिक्षा में वे नृत्य, संगीत, चित्रकला आदि की भी शिक्षा ग्रहण करती थी। प्रमदाओं की कमनीय भाव–भंगिमा और आकर्षक नृत्यकला शोभा और सुन्दरता का केन्द्र बिन्दु थी। चित्रकला का समुचित विकास हो चुका था। सुस्थ रेखांकन रंगों का अपेक्षित प्रयोग तथा आकृति का अभिव्यक्तिकरण चित्रकला के प्रधान आधार थे। इस सम्बन्ध में अनेक पौराणिक संदर्भ मिलते है। वाणासुर के मंत्री कुष्माण्ड की कन्या की सखी चित्रलेखा ने चित्रपट पर अनेक देवों, गंधवों और मनुष्यों की आकृतियो का अंकन किया था, जिसमें अनिरूद्ध का भी चित्ताकर्षक चित्र था। कन्याओं को मुख्यतः हस्तकला (खिलौने बनाने की कला एवं सिलाई आदि), सुगम कला (गायन, वादन एवं नर्तन), चित्र कला, बागवानी, पाक विद्या, एवं वेदाध्ययन कराया जाता था। इसके अतिरिक्त कन्याओं को सम्यक् रूप में अतिथि–सत्कार करने एवं गृहस्थी का कुशलतापूर्वक संचालन करने की पूर्ण शिक्षा दी जाती थी।

छात्राओं को शिक्षा प्रदान करने के लिए छात्रा–शालाएँ हुआ करती थी। वात्स्यायन ने स्त्रियों के लिए 64 अंगविद्याओं के अध्ययन का उल्लेख किया है। उसने 'उपाध्याया', 'उपाध्यायी', 'आचार्या', आदि का भी उल्लेख किया है। वात्स्यायन के अनुसार 64 अंग विद्या की शिक्षा स्त्रियों को दी जाती थी जो निम्न थी– (1) गीतम् (2) वाद्यम् (3) नृत्यम् (4) आलेख्यम् (5) विशेषकच्छेद्यम् (6) तण्डुलकुसुमवलिविकाराः (7) पुष्पास्तरणम् (8) दशनवसनांगरागः (9) मणिभूमिकाकर्म, (10) शयनरचनम् (11) उद्‌कवाद्यम् (12) उद्‌काघातः (13) चित्राश्ययोगाः (14) माल्यग्रथनविकल्पाः (15) शेखरकापीडयोजनम् (16) नेथ्यप्रयोगाः (17) कर्णपत्रभंगाः (18) गंधयुक्तिः (19) भूषणयोजनम् (20) ऐन्द्रजालाः (21) कौचुमाराश्चयोगाः (22) हस्तलाघवम् (23) विचित्रशाकयूपभक्ष्यविकार क्रिया (24) पानकरसरागासवयोजनम् (25) सूचीवानकर्माणि (26) सूत्रक्रीडा (27) वीणडमरूकवाद्यानि (28) प्रहेलिका (29) प्रतिमाला (30) दुर्वाचकयोगाः (31) पुस्तकवाचनम् (32) नाट्‌काख्यारियकादर्श नम् (33) काव्यसमस्यापूरणम् (34) पट्टिकमावेत्रवानविकल्पः (25) तक्षकर्माणि (36) तक्षणम् (37) वास्तुविद्या (38) रूप्यरलपरीक्षा (39) धातुवाद्यः (40) मणिरागाकरज्ञानम् (41) वृक्षायुर्वेदयोगाः (42) मेषकुक्कुट लावक युद्ध विधिः (43) शुकसारिकाप्रलानम् (44) उत्सादने संवाहने केशमद ने च कौशलम् (45) अक्षरमुष्टिकाकथनम् (46) म्लेच्छितविकल्पाः (47) देशभाषाविज्ञानम् (48) पुष्पशटिका (49) निमित्तज्ञानम् (50) यन्त्रमातृका (51) धारणामातृकर (52) सम्पाट्यम् (53) मानसोकाव्यक्रियाः (54) अभिज्ञाानकोशः (55) छन्दोज्ञानम् (56) क्रियाकल्पः (57) छलितकयोगाः (58) वस्त्रगोपनानि (59) द्यूतविशेषः (60) आकर्षक्रीडा (61) बालक्रीडनकानि (62–4) वैनयिकीनां वैजयिकीनां व्यायामिकीनां च विद्यानां ज्ञानम्।

शिक्षक के रूप में नारी ने अपनी द्वारा ज्ञान का प्रसार किया हैं, वैदिक काल के एतरेय ब्राह्मण एवं कोषितकी ब्राह्मण से जानकारी मिलती है कि नारी शिक्षक के रूप में भी सम्मान प्राप्त करती थी एवं ज्ञान के संचार करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करती थी आश्वालायन ग्रहसूत्र से विदुषी महिला अर्थात वे विद्वान नारी जिन्होने ज्ञान प्राप्त कर ज्ञान का संचार शिक्षिका बनकर किया हैं तीन विदुषी शिक्षिकाओ का वर्णन प्राप्त होता हैं बड़वा,वाचक्नवी, एवं गार्गी। इन्हें उपाध्याया भी कहा जाता था। उस काल में 20 स्त्रियों को शिक्षा प्रदान करने के लिये छात्राशाला का वर्णन मिलता हैं पतंजलि के द्वारा औद्यमेद्या आचार्य का उल्लेख प्राप्त करने वाली छात्रायें औदमेघा कहलाती थी। कार्यों में दक्षता को वर्णित करता वैदिक साहित्य, स्पष्ट रूप से देखा जा सकता हैं कि ज्ञान में सम्मानजनक एवं ललित कलाओ में पारंगत होने के साथ साथ उस काल में कृषि कार्य स्त्रियों के सहयोग करने का वर्णन भी प्राप्त होता हैं पूर्व वैदिक काल में वर्णित हैं कि अपाला ने कृषि कार्य कर रहे अपने पिता का सहयोग किया। वैदिक काल में स्त्रियों के अन्य कार्य में भी पारंगत होने के साक्ष्य प्राप्त होते हैं उस काल में कन्यायें/स्त्रियां अपना सर्वागीण विकास करने हेतु तत्पर रहती थी, स्त्रियां नृत्य कला एवं वैदिक ऋचाओ का सस्वर वाचन करती थी जिससे श्रवणो को रसास्वादन की अनुभूति होती थी साथ ही स्त्रियां सूत काटना,कपड़े बुनना एवं अन्य कार्यों में भी दक्ष थी, ग्रथो के अध्ययन से ज्ञात होता हैं कि उस समय की नारियों की स्थिति समाज में सम्मानजनक एवं उन्नित थी। आर्थिक रूप से भी नारी सामर्थ्यवान थी, तैतरीय ब्राह्मण में वर्णित हैं पत्नी वै पारिणाह्यस्य ईशः। अर्थात वह बस्तु जो भेंट के रूप में नारी को प्राप्त हो रहा हैं उन बस्तुओ पर नारी का पूर्ण अधिकार है। नारी को सम्पत्ति के अनेक अधिकार प्राप्त थे, विवाह के समय पति के द्वारा यह कहा जाता था कि वह आर्थिक रूप से किसी भी प्रकार अपनी पत्नी के अधिकार एवं उसके हित पर अतिक्रमण नही करेगा,सामाजिक जनों इष्टों द्वारा प्राप्त होने वाले उपहारों पर केवल उसी स्त्री का एकाधिकार था, इनके आधार पर कहा जा सकता हैं कि वैदिक काल में नारी आर्थिक रूप से भी सामर्थ्यवान थी।

अथर्ववेद में विधवा स्त्री हेतु धन की व्यवस्था का उल्लेख मिलता हैं, साथ ही वे कन्यायें जो विवाह नही करती थी और अपने पिता के घर में जावन यापन करती थी उनके लिये उनके पिता की सम्पत्ति में अधिकार ऋग्वेद की ऋचा 10. 85.13 में मिलता हैं। वैदिक काल मे युद्ध भूमि में नारी का वर्णन मिलता हैं, ऋग्वेद के दशम मण्डल के 10.102.2 रथीरभून्मुद्‌गलानी गविष्टौ भरे, के माध्यम से नारीयों के युद्ध भूमि में जाने एवं युद्ध का वर्णन प्राप्त होता हैं महर्षि मुदगल की पत्नी का अपने पति के साथ युद्ध भूमि में जाना एव ं अपने शौर्य एवं पराक्रम से सभी को अभिभूत करन े का वर्णन प्राप्त होता हैं। सामाजिक रूप से उस समय पर्दा प्रथा का प्रचलन नही दिखता हैं,समारोहो, विवाह, धार्मिक सभाएं, उत्सवों एवं अन्य गोष्ठियों कार्यक्रमों जहां पर लोग एकत्रित होते थे एवं अपने विचारो का आदान प्रदान करते थे वहां पर कोई पर्दा का प्रचलन नही था, अथर्ववेद (9.5.18) में वर्णित हैं ब्रह्मचर्णेय कन्या युवानं विन्दते पतिम। अर्थात नवविवाहिता वधू को देखने एवं उसे आशीर्वाद देने को कहा गया। ऋग्वेद के 10.89.33 से ज्ञात होता हैं कि सामाजिक रूप से नारी को स्वयंवर करने के अधिकार प्राप्त थे जो नारी की स्वतंत्रता एवं यह भी दर्शाता हैं कि नारी के पर्दा प्रथा जैसी कोई प्रथा का चलन नही था।

वैदिक काल में नारी एवं तात्कालीन समाज के अध्ययन से यह ज्ञात होता हैं कि उस समय नारी को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे एवं तात्कालीन समाज में वे अग्रणी थी एक ओर जहां आधुनिक समाज और स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने वर्ष बाद भी हम पुरूष एवं स्त्री के बीच की खाई नही पाट पाये और वहीं दूसरी ओर हम हजारों साल के पूर्व वैदिक काल को देखे जो आज के समाज से कई गुना समृद्ध एवं आदर्श समाज हैं, उपरोक्त अध्ययन से ज्ञात होता हैं आज से हजारो साल पहले का वैदिक काल समाज आदर्श एवं प्रगतिशील समाज था और उस समाज का ध्येय था ज्ञान की अलख जगाना और उससे चहु ओर अज्ञानता रूपी अंधकार को मिटाना। इसके साथ ही वैदिक काल के अध्ययन से परिलक्षित होता है कि तात्कालीन नारी भी अपने उत्थान एवं अपने विकास हेतु संकल्पबद्ध थी साथ ही उस समय सामाजिक उन्नति भी उसी में ही निहित हैं।

सारांशः

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है कि वैदिक कालीन नारी का समाज में सम्मानीय और गरिमामय स्थान था। वैदिक कालीन नारी में अनेकानेक गुण थे जिसके कारण समाज में देवी और श्री के रूप में आदृत और सम्मानित थी। वैदिक युगीन स्त्री अपनी अस्मिता, अस्तित्व को बनाये रखने हेतु कृत संकल्प रहती थी। तत्कालीन नारी हर क्षेत्र में अपना योगदान दे रही थी। वैदिक वर्णनों से परिलक्षित होता है कि तत्कालीन नारी अपने विकास हेतु जागरूक थी। वैदिक साहित्य में कुछ ही ख्याति प्राप्त महिलाओं के वर्णन से ज्ञात होता है कि ये तत्कालीन समाज में विशेष ख्याति प्राप्त स्त्रियाँ थी। वैदिक काल में स्त्री को उच्च स्तर प्रदान किया जाताथा और उसे वरिष्ठ माना जाता था तथा उसे देवी की उपमा दी जाती थी। भारतीय संस्कृति एवं उसके पुरातन काल के साहित्य के अध्ययन में देखा जा सकता हैं कि नारी की उन्नति उस समाज की दिशा तय करती हैं भारतीय संस्कृति सदैव ही यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता की भावना एवं इस सिद्धांत की अनुगामी हैं। भारतीय संस्कृति के उद्गम अर्थात प्राचीन काल से ही नारी का स्थान सर्वोच्च एवं सम्मानीय रहा हैं, संस्कृति का स्वर्णिम काल जिस समय का रचित साहित्य आज भी समूचे जगत को सोचने एवं उस पर चिंतन पर मजबूर कर देता है अर्थात वैदिक काल में नारी की महत्ता को देखा जा सकता हैं उस समय की विदुषी महिलाओ के ज्ञान एवं पुरूषो के साथ समान रूप से संस्कृति के उत्कर्ष में अग्रणी रही हैं। नारी की महत्ता का वर्णन करते हुये बृहदारण्यकोपनिषद् में लिखा हैं अयमाकाशरू स्त्रिया पूर्यते। अर्थात स्त्री सृष्टि की रिक्तता को पूर्ण करने वाली की संज्ञा दी गयी हैं। साथ ही तैत्तिरीय ब्राह्मण में नारी की महत्ता का वर्णन करते हुये लिखा हैं अयज्ञो वा एषः योऽपत्नीकः अर्थात पत्नी के बिना कोई भी यज्ञ एवं अनुष्ठान पूर्ण नही माना जा सकता हैं साथ ही वे आहुती जो पति देता हैं देवताओ के द्वारा पत्नी (यजमान की पत्नी) के अभाव में स्वीकार नही होती हैं। उस काल के स्त्रोतो एवं साहित्य के अनुसार उस काल की महिलायें धार्मिक, सांस्कृतिक, कार्यक्रमों में पुरूषों की अपेक्षा अग्रणी रूप से हिस्सा लेती थी एवं अपने को ज्ञान की पराकाष्ठा की हर कसौटी पर खरा पाती थी। मानव जीवन को भारतीय दर्शन के अनुसार यदि वर्णित किया जाये तो कहा जा सकता हैं संपूर्ण जीवन की धुरी ज्ञान,धर्म एवं शा ंति इसमें शांति शब्द का स्त्रीवाचक होना समाज में स्त्री की मह्त्ता को वर्णित करता हैं साथ ही हिंदू धर्म में स्त्री को समृद्धि एवं संस्कृति का पोषक भी माना जाता हैं।

संदर्भ ग्रंथः

1. मिश्र, जयशंक, (2006). प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना।
2. ऋग्वेद 1.72.5, 5.32, 8.31 या दम्पत्ति सुममसा आ च धावतः। देवा सोनित्या शिरा।।
3. झा एवं श्रीमाली, (2001) प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली।
4. ऋग्वेद 7.48, 1.124.7 अभ्रातेव पुंस एति प्रतीवो गर्तारूगिव सनये धनानाम्।
5. राजकुमार, (2005) नारी के बदले आयाम, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस।
6. अल्तेकर, ए.एस. (1956)द पोजीशन आफ विमेन इन हिन्दू सिवलाइजेशन। मोतीलाल बनारसीदास, वारानसी।
7. मजूमदार (2011).ई.पू. भारत का उन्नत इतिहास, चौथा संस्करण, मैकमिलन पब्लिशर्स इंडिया लिमिटेड, दिल्ली।
8. प्रसाद एल.(2007) प्राचीन भारत का सरल इतिहास, 11वां संस्करण. एजुकेशनल पब्लिशर्स, आगरा।
9. त्रिपाठी रमाशंकर. (1991).प्राचीन भारत का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली।